--- IMG\_7428.txt ---

#  
  
। जी की जीवनी और उ  
४  
  
उपदेश नं० दो  
रहनी-सहनी व सदाचार  
  
मेरे प्रेमियो और माननीयो ! द  
  
धर्म के दो अंग हैं १- चिन्तन और २- आचरण ग्‌  
साधन और अभ्यास के साथ ही साथ अपनी रहन-सहन\*“ गी  
ठीक कर लेना चाहिये, तब कार्य सिद्ध होता है. | जो लोग  
यम और नियम का पांलन नहीं करते जो अपने जीवन <  
धर्मानुसार नहीं बनांते उनको सफलता नहीं मिल सकेगी  
. गैंग से मुक्त होने के लिये हम ओषधि का सेवन करें परन  
  
में रखते ईए इस वर्तमान युग के महापः  
  
तोगा कमी दूं बनाई हो उसके अनुसार तुम्हें चंत  
पं कुछ लाभ होगा इस बात को  
वाहिये | जब याद  
  
क्र

--- IMG\_7430.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ४५  
  
इस सनन्‍्त-मत में दाखिल होने वालों को यहाँ के  
नियमों को ही पालन करना पड़ेगा दूसरे पन्‍्थों के सामाजिक,  
शारीरिक व मानसिक कर्मों को त्याग देना होगा | हाँ, यह  
दूसरी बात है कि जिस कूल में तुम उत्पन्न हुए हो तथा जिस  
सुसाइटी में तुम रह रहे हो उसकी लौकिक रस्में तुम करते  
रहो परन्तु उससे भी यह ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि घर  
वाले यदि तुमसे "कोई ऐसा काम करना चाहें कि जो तुम्हारी  
आत्मिक-उनन्‍्नति के मार्ग में बाधक हो तो उसको कभी  
न करो। | रख  
  
कभी-कभी यार-दोस्त व सम्बन्धी शराब इत्यादि नशीली  
चीज पीने, जुआ व ताश खेलने, नाच, तमाशे और फिर थ्येटर.  
देखने, बदचलन स्त्रियों के यहाँ चलने, चोरी -वा चालाकी  
करने के लिये मजबूर किया करते हैं उस समय तुम कड़े पड़  
जाओ । अपने ऊपर उनका प्रभाव न पड़ने दो | अपनी  
मानसिक-शक्ति (जा 7०५०) निर्बल न होने दो वह खुद ब  
जद तुम्हारे असर में आ जायेंगे | जिन लोगो में निर्बलता  
होती है, जिन्होंने अपने जीवन के लिये कोई नियम नहीं  
+नाया, वही दूसरों से प्रभावित हो सकते हैं । पक्के उसूल  
  
का आदमी कभी दूसरों की बातों में नहीं आता | ः  
  
ऐसे मित्रों और सम्बन्धियों से दूर नहीं रहने की  
| कोशिश करो क्योंकि वह तुम्हारे बैरी हैं इसलिये कि तुमको  
त्मानन्द से वंचित रखना चाहते हैं | तुम्हारा काम यह  
होना चाहिये कि उन सबको भी शुभ मार्ग की ओर लाओ, न  
कि उनके साथ खुद भी खड्ड में गिर पड़ो ।

--- IMG\_7431.txt ---

[ महात्मा जा की जीतता ४ “पडा  
४६  
  
पौधों लगावें परन्तु खाद उसमें ऐसी  
  
आप लोग कोई गायब न हो तो अवश्य ही वह वृ  
  
कि जो उसके लिये लाभदायक क्द्की में बढ़िया  
जायगा। अथवा एक खुले मुह की बोतल व  
  
सूख जायगा। का तेल डालते रहें  
गुलाब भर दें और फिर उस पर मिट्टी का जल में तेल  
  
वह सुगन्धि गुलाब की न रह कर उत्त जल हर में तेल  
  
दुर्गनध आने लगेगी इसी प्रकार उसका हाल जाना। अ  
  
भक्ति का अंकुर तुम्हारे अन्दर फूटा है इसकी रक्षा करो  
  
सदाचार और सत्संग रूपी जल, वायु से इसको बड़ा करते  
  
चलो, जिस दिन पूरा वृक्ष बन जाये, जिस दिन इसका रंग  
पक्का हो जाये फिर कुछ डर नहीं रहेगा चाहे तुम कुछ  
  
करो परन्तु उस समय तक बहुत होशियारी से रहो | .  
  
व्यापार और व्यवहार सम्बन्धी भी अपनी बातें ठीं'  
  
ही तुम विजय तुम्हारा अन्त करण र्‌ क्‍ | बलवान बनेंगा । द इसके दास  
>य भ्राप्त कर सकोगे उस समय आसुरी- वृततियाँ

--- IMG\_7432.txt ---

....... शी |  
प्रहात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ५७ | ब  
  
तुम्हें छोड़ के भाग जाँयगी और तुम आनन्द की निद्रा ले  
सकोगे | क्‍  
  
परन्तु उस अवस्था के आने से पूर्व तुम बुरी बातों से  
कि जिनका निषेध किया गया है बचते रहो | यदि किसी  
समय तुम अपने लिये कोई फैसला न कर सको, यह समस्या  
तुमसे हल न ही और तुम कर्तव्य-विमूढ़ हो जाओ तो बड़े  
जनों से राह लो | इस काम के लिये अनुभवी गुरु बहुत  
अच्छा होता है यदि तुम्हारा सम्बन्ध उससे हो चुका हो तो  
चाहे व्यवहारी काम हो और चाहे पारमार्थिक हो हमेशा इससे  
आज्ञा लेकर कार्य करो ताकि तुमको धोखा न हो:और तुम  
अपे उद्देश्य सेगिग न जाओ |. ः  
  
पुस्तकें और समाचार-पत्र  
  
पढ़ना, लिखना अथवा स्वाध्याय को लोग मुख्य समझते  
हैं शास्त्रों ने भी इसकी आज्ञा दी है परन्तु जिस प्रकार और  
प्रथाएँ बिगड़ गई हैं उसी तरह इसकी भी दशा है (आजकल \_  
अखबार और नॉविल (0५०४०) पढ़ने का बहुत रिवाज हो  
गया है यह अभ्यासी के लिये बहुत ही हानिकारक है | “एक  
सर और हजार सौदा” वाली कहावत चरितार्थ हो रही है विज  
दिल और दिमाग सूक्ष्म इन्द्रियाँ हैं, भगवत्‌ प्राप्ति और त्मलाभ  
के लिये इनको ईश्वर ने हमें दिया है, इनके डा ही हे  
दुखित अवस्था से छूट के सुख व शान्ति प्राप्त रास  
| परन्तु हमने इनको कूड़े-करकट की कोठरी बना रक्खा है ।  
दुनियाँ भर की विषैली और गन्दी बातें सुन सुनाकर और  
पढ़ा-पढ़ा कर इसमें हम दूँस लेते हैं यही सब आगे चलकर

--- IMG\_7433.txt ---

४८  
संस्कार बन जाते हैं और हमको जन्म-मरण के च कर  
  
रख के बाँध देते हें | के >. छर हु  
दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिये;  
ध्यान गैरों का.मिटा उसके बिठाने के कं लिये. है  
पढ़ना-पढ़ाना तथा नई-नई बातों के गानने के. क्‍ -  
'उत्सुक होना मनुष्य का स्वाभाविक गुण है वह इन सर्ब बा  
के लिये विवश है यह भी हम जानते हैं परन्तु इतनी बालओ  
यान में रखना चाहिये कि यदि उसके पढ़ने, सुनने से तुम्लाओओ  
चित्त में विकार उत्पन्न होने लगें अथवा चंचलता बंढ़ें जा  
और अपने इष्ट की सुधि बिसर जाये तो उसे फेंक <आ  
उसको हरगिज न देखो, और यदि वह पुर+क वा समाचाओ  
पत तुम्हारे अन्दर प्रेम उत्तेजित करें और तुम॒को सद्‌गुणों कु  
  
“बी प  
  
कक  
  
पद  
डे  
  
ऊ  
  
शिक्षा दें तो उसके पढ़ने में कोई हानि नहीं है...  
तुम एकाग्रता का अभ्यास कर रहे हो “इसके जेब  
ख्यालात जितने ही कम आवें उतने ही-अच्छे हैं परन्तु अआ  
वह काम करते चले जा रहे हैं कि जिससे-चौगुनी नहीं बल्खि  
बीस गुन्ते विचारों का ढेर चाहे वह तुम्हारे काम के हों ये  
हों तुम्हारे मस्तिष्क में भर जायें... | . कलर हे  
पाते हैं या तो बिल्कूल जाहिल और अनपढ़ हो और पद  
विद्वान्‌ हों कि जिन्होंने र लिखकर और 5 न चा  
अपनी न्‌ः शंकाओं < | 'तृञ्र पढ़-लिखकर और संमंझ सं  
अपनी शंकाओं का स्वयं ही निवारण-करे | लिंया“हों अदा  
इतने निर्षेक्ष और-हठी न हों कि समझने पर सी ऊँ: अर्वी ४/  
  
जो विचार व सिद्धान्त उन्होंने अपने" दिमाग में  
  
अर... $८२२७/४६  
ही शज्य द.!  
  
है हि हद  
न हर हा |

--- IMG\_7434.txt ---

पहात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ४६  
म  
  
उनको निकलने ही न दें और नवीन विचारों को घुसने दें |  
कई विद्वान्‌ ऐसे अहंकारी और हठी होते हैं कि वह लक की  
ठीक बात को भी नहीं मानते, अपनी ही कहे जाते हैं ऐसों के  
भाग्य में यह विद्या नहीं होती है वह इससे वंचित रहेंगे । हा!  
कोई तुम्हारी समझ में नहीं आई है तो उसको पूछो, उसमें  
तर्क न करो, इसमें हानि नहीं परन्तु समझ में आ जाने पर  
भी अपनी जिदद न छोड़ना यह जिज्ञासु का लक्षण नहीं है ।  
परन्तु ऐसे हठी अधिकतर वह लोग होते हैं कि जो न॑  
तो जानकर ही हैं और न अनजान । वरन्‌ बीच में लटके हुए  
हैं | अनपढ़ आदमी अटल विश्वासं और श्रद्धा के द्वारा  
उन्‍नति तो अवश्य जल्दी कर जाते हैं परन्तु उनके बहक  
जाने और गिर जाने का हमेशा डर लगा रहता है क्योंकि यह  
अज्ञानी भक्त हैं | और जो पढ़ा लिखा आदमी समझ सोच के  
इधर लगता .है उसको विश्वास लाने के लिये कुछ समय तो  
>वर्य लगता है परन्तु फिर उसका निश्चय अटल होता है  
और वह अपना ही नहीं बल्कि दूसरों का भी भला कर सकता  
; है हमारे यहाँ नये अभ्यासियों के लिये अधिक पुस्तकें देखना  
क्‍ पक हैं इसलिये कि उस्तकों से साधन में शंकाएँ उत्पन्न  
का डर लगा रहता है और शंका मार्ग के विघ्न  
' है इससे रुकावट होती है। इस मार्ग के लिये  
इसका एक सूक्ष्म भेद और भी है जिंसको  
समझते हैं | अभ्यास काल में. जो को लोग कम  
अनजान आदमी के ही ठीक होते हैं.  
>पुभव में सन्देह रहता है कि कहीं

--- IMG\_7435.txt ---

जी की जीवनी 82  
  
॥ महीत्मा जी द .  
  
सम वह यदि  
  
भीतर मौजूद हो न सुना हो ओर न पढ़ा हो वह य|  
को न कभी देखा हीं जायगा । 5.  
रूप को न सच्चा दर्शन कहा अं  
सम्मुख आये तो उसको अभ्यास उच्चकोटि का न हो जाय  
इसीलिये जब दें तक तक पुस्तक पढ़ल्ला।  
  
गुरु नदेतक २  
  
सका ; है | अनुभव हो जाने पर थोड़े पढ़ने हक रे ' कि  
उस समय के से अपनी ५  
  
रहस्य समझ में आ जाते हैं और उस सर के जोकर २ निश्चय  
अनुभवों का महापुरुषों के अनुभवों से का देखने चाहिगे  
हो जाता है । परन्तु उस समय भी वही ग्रन्थ नहीं है। ही  
जो. टकसाली हैं और जिनसे अवनति का डर न ा  
सनन्‍्त-मत..... हा  
  
५०  
हैं एकाग्रता कं  
  
मेरा ख्याल है कि अभी आप लोगों में से बहुत कम ऐसे  
होंगे जो सन्‍्त-मत के सिद्धान्तों को समझे होंगे सन्‍्त--मंत हि  
  
पूर्ण रीति से ईश्वर की ओर ले जानें वाला तरीका है |  
बहुत ही सरलता और शीघ्रता  
है और जिज्ञासुओं को अनेक प्रकार  
पार पहुँचा देता है |  
  
अधिकतर लौग जो इसमें शरीक होते हैं वह अपने॥  
पुराने उन विचारों को कि जिनको उन्होंने साधु- पंन्यािय यो,  
  
4+ कि  
  
यह |  
से आत्म साक्षात्कार करा देता:  
कार के झंझटो से बचाता हुआ जञ

--- IMG\_7436.txt ---

पहात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] हर  
  
मिलाने वाले संन्यासियों का झूठा ज्ञान योग इत्यादि ने हमारे  
भीतर ऐसा घोंसला बनाया है और ऐसा.हमको जकड़ लिया  
है कि उनसे पीछा छुड़ाना हमको दुर्लभ हो गया है ल्‍ वर या  
साधु और संन्यासी जो वास्तव में विरक्त नहीं हैं अपनी-अपनी ़्  
सिद्धियाँ और करामातें दिखाते फिरते हैं और लोगों को श्रम: |  
में डाल रहे हैं हिन्दुओं में ही नहीं मुसलमान सूफियों में. भी  
आजकल यह प्रथा बड़ी जोरों पर है, उनमें यह. दस्तूर हों.  
गया है कि पुराने जमाने के गढ़े हुए किस्से उनकी करामातों-  
और अनुभव को भोले लोगों को सुना-सुना कर अपने मत:  
की प्रशंसा के पुल बाँधा करते हैं, इन्हीं सब बातों का फल; हा  
का यह हुआ है कि इस अन्धकारमय युग के मूढ़ मनुष्य इन्हीं  
बातों को सब कुछ समझने लगे हैं | जो साधु ऐसा कोई  
चमत्कार दिखादे वही उनके लिये बड़ा भारी महात्मा है और >  
ऐसी शक्तियाँ प्राप्त कर लेना ही महत्‌-पद है |.  
  
मेरे प्यारे भक्तो ! तुम इन बातों के चक्कर में मत पड़ो।  
इन विचारों को अपने दिल से निकाल फेंको | इन शेखी अ  
बघारने वालों से दूर रहो, ईश्वर की प्राप्ति करो .| यह सब. #  
  
मन का खेल है । यह माया पिशाचिनी का: तमाशा है इन £5  
  
कामों के करने वालों को भगवान नहीं मिलत्ते, वह शेखी और  
दिखावे से दूर रहते हैं | अहंकारी पुरुष उनके दरबार में नहीं  
जा सकता । इन विभूतियों को प्राप्त कर मनुष्य अभिमानी  
हो जाता है । सन्‍्तजन इनको विषैली वायु समझ त्याग: देते  
हैं। सरलता व साधुता स्वभाव में आ जाना ही महॉन्‌-पंद

--- IMG\_7437.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
५२  
  
बातों की लेकर यहाँ  
की बातों की इच्छा किसी कर दूसरे पा  
यदि यु पर को लो लौट जाना चाहिये और किसी दूर  
  
तुम्हें घर को ल न इस बात.  
का ४ योगी की तलाश करना चाहिये | यहीं पक हि  
का वायदा नहीं किया जाता कि आज से तुम सुखी ही सुखी 5  
  
रहोगे ऊपर दःख कभी नहीं आयेंगे । तुम जितने भी ह  
काम दा क में करना चाहोगे वह सभी तुम्हारे है कं हे  
और परलोक में भी जाकर तुमको किसी प्रकार का कष्ट नः  
होगा चाहे जैसे अपराध करो परन्तु स्वर्ग का द्वार तुम्हारे |  
लिये खुला रहेगा । ः । कर ई  
संसारी लोग स्वार्थ को लिये साधुओं के पास जाते हैं। जुडे  
कोई चाहता है मेरे रोजगार में उन्नति हो और मुझे खूब लाभ :  
हो, कोई नौकरी चाहता है कोई मुकद्दमा जीतने की धुन में है...  
कोई सन्तान के लिये गण्डा-तावीज और दुआ कराता है.  
कोई आगे पीछे की बात जानना चाहता है इत्यादि | और  
यदि इन बातों को नहीं चाहना तो यह चाहना तो अवश्य ह  
सबको रहती है कि बिना परिश्रम किये और बिना सदाचारी |  
बने सम्पूर्ण दैवी-शक्तियाँ उसके आधिपत्य में आ जायें |.  
उसे कुछ भी न करना पड़े और आज ही वह सिद्ध बन जाये /  
अथवा किसी विचित्र बात का उसको अनुभव होने लगे: म  
सन्तों के यहाँ निष्कामता बरती जाती है जो डर  
बेगरज होकर सच्ची श्रद्धा और निष्ठा से परमात्मा की  
बैकते हैं | उनको ही सन्त जन अधिकारी व पांत समझते  
ह। सन्तों से प्रेम करने के लिये स्तों के गुण सीखने  
चाहिये। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में कई स्थानों

--- IMG\_7438.txt ---

पहात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
५३  
  
पर सन्‍्तों के लक्षण वर्णन किये हैं | भगवदगीता में  
पुरुषों की दैवी-सम्पत्तियाँ बतलाई हैं तुम उनको पहो जा  
उनके अनुसार अपना जीवन बनाओ | तुम अपने. अन्दर चर  
जिन-जिन चबुटियों को देखो उनको धीरे-धीरे बाहर फेंक दो”  
और अनन्य प्रेम से हर समय उसको याद करो | कोई भी छः  
श्वॉस उसकी सुधि से खाली न निकले । ऐसा करने से ही... ०  
तुम कृपा के पात्न बन सकोगे, उसी समय अमृतमयी आनन्द-वर्षा  
तुम्हारे ऊपर होने लगेगी और तुम प्रेमजल में सराबोर हो क्‍  
जाओगे । सात्विकी वृत्तियाँ जब तक नहीं आती हैं तब तक  
समझ लो कि हम उसके स्वर्ग मन्दिर से बहुत दूर हैं ।  
सतोगुण ही उस जीने का द्वार है कि जिस पर चढ़ कर हम  
वहाँ पहुँचेंगे । द पु रा  
  
सन्त मत का आइडियल (आदर्श) सब मतों से -ऊँचा  
है। योगी ब्रह्म और परब्रह्म को ही सब दुछ समझ बैठे हैं |  
इसी प्रकार वैष्णव विष्णुलोक को और शैव शिवलोक को \_  
  
सबसे ऊँचा जानते हैं | यह सब माया # “  
स्थानों को पार करते हुए हुवपद  
और पंच कोशों से ऊपर  
  
समझने के लिये पहिले  
फिर साधु और सन्तों के दर्जे को  
  
... इस बात के  
$ई \_.. «गोरी को सुनना होगा  
  
या होगा तब यह बात  
  
|) आर  
जा  
॥|  
ह

--- IMG\_7439.txt ---

कु  
  
। जी की जीवनी और उपदेश  
  
अवतार ु  
लगभग प्रत्येक धर्म के मनुष्य इस सिद्धान्त को मानने  
वाले हैं कि जब संसार में अधर्म का अन्धकार इतना अधिक  
बढ़ जाता है कि जिसके सम्मुख धर्म की रोशनी फीकी पड़  
जाती है देश की हवा ऐसी जहरीली बन जाती है कि सतृपुरुषों  
की शिक्षा तथा शास्त्रों की आज्ञा की, राजा से लेकर प्रजा  
तक कोई परवाह नहीं करता, सत्य असत्य का विचार नष्ट  
हो जाता है बुराइयों को भी धर्म में शामिल कर लिया जाता  
है इत्यादि, जब असल भण्डार में मोक्ष उत्पन्न होकर दया की  
लहरें उस आनन्द-सागर में उमड़ने लगती हैं।  
उस सतूचिदानन्द की प्रेरणा से पृथ्वी पर से उस  
समय एक महान दिव्य शक्तिशाली आत्मा का प्रादुर्भाव होता  
  
है जो यहाँ आकर वहाँ की स्थिति पर विचार करता हुआ देश  
  
चाट उतारता है अथवा मरवा डालता है ताकि  
जाय हर सुगन्धि ही रह जाय ।  
से शक्ति सम्पन्न महापुरुषों को “अ  
ब्कछ यह दस जो स्वेच्छाचारी आत्माएँ सम्पूर्ण सामर्थ्यों  
ड९ दूसरों की भलाई के लिये दिव्य से छा  
कर मनुष्य शरीर धारण करती हैं उनको “अवतार कहते हैं द  
|

--- IMG\_7440.txt ---

पहात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ५५  
  
आज तक जितने भी अवतार हुए हैं सबने ही दुष्ट  
रर्तियों का नाश किया है, केवल श्री गौतम बुद्ध और ईसा  
के लिये इतिहास यह बतलाया है कि उन्होंने इस काम को  
नहीं किया, परन्तु उनके पश्चात्‌ उनके अनुयायी भिक्षुकों और  
हमराहियों ने वह घमसान मारकाट मचाई कि जिसको सुनकर  
रोमाउच हो जाता है। क्‍  
इस ब्रह्माण्ड में अनेक स्थान हैं जिनको पूर्व-पुरुषों ने  
पञ्चकोशों में विभकत किया है । यह सारे ही अवतार इन  
पञ्चकोशों के भिन्‍न-भिन्‍न स्थानों से उतर के पधारे हैं जैसे  
श्री परशुराम जी प्राणमय कोश से और भगवान श्री रामचन्द्र  
जी काल पुरुष व ब्रह्म के स्थान मनोमय कोश से, भगवान  
दुद्ध ज्ञामय कोश से और भगवान श्री कृष्णचन्द्र परब्रह्म व  
महाकाल के स्थान आनन्दमय कोश से इत्यादि |... ।  
आनन्दमय कोश शुद्ध आत्मा का स्थान है, यहाँ पर  
परा और अपरा दोनों प्रकृतियाँ मिलकर शुद्ध मनन शुद्ध बुद्धि,  
. और शुद्ध अहंकार को प्रेरित करती रहती हैं । यही पूर्ण पुरुष  
का स्थान है इसलिये श्री कृष्ण महाराज को षोडश कलाधारी  
अवतार माना जाता है ऐसे अवतारी पुरुष अपना कार्य समाप्त  
करके फौरन ही अपने निज स्थान को लौट जाते हैं ।  
जिस प्रकार इस देश भारतवर्ष में अवतार हुए हैं उसी  
प्रकार अन्य देशों में भी कभी-कभी ऐसी आत्माएँ आती रही  
हैं कि जिनके द्वारा उन देशों को उद्धार हुआ है जैसे हजरत  
| मूसा हजरज मुहम्मद साहब और जोराष्टर इत्यादि । वहाँ  
की भाषा में इनको 'नबी' कहा जाता है । द

--- IMG\_7441.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश:  
  
(५६  
  
कितनी पाशविक मूढ़ता है कि. एक नबी के- अनुयायी...  
  
दूसरे नबी के मानने वालों से लड़ते रहते हैं उनकी समझ मेँ :  
यह नहीं आया कि यह सब एक ही अंग हैं, ब्रह्म क्री,  
भिन्न-भिन्न शक्तियों को लेकर भिन्‍न-भिन्‍न काम करने नक  
लिये आये थे और पश्चात्‌ फिर उसमें लय हो गये ।.  
सन्‍त और परमसन्त  
  
इन अवतारों के बताये हुए मार्ग में भी जब थोड़ी-थोः  
गड़बड़ी आ जाती है तब उसके सुधार करने के लियेन्म  
आत्मायें जन्म लेती हैं और वह समयानुकूल थोड़ी सी तरमीपुई  
और काट छाँट करके फिर कसे मनुष्यों को उत्साह ती।  
हैं | यह सब “सन्त” कहलाते हैं । ऐसे सन्त प्रत्येक देझ  
सौ वर्ष पीछे, पाँच सौ वर्ष प्रीछे और हजार वर्ष पीछे  
करते हैं । इनका. काम मरमी और प्रेम से होता है सख्ती  
करने का इनको अधिकार नहीं होता | जो इन पर  
आते हैं उनको मार्ग दिखा देते हैं और जो इनकी बात लोई  
मानते उनसे उदासीन हो जाते हैं । ऐसे महापुरुषों की रु  
पहचान यह होती है कि उनका आचरण और व्यक्ट  
धर्मानुसार होता है । मर्य्यादा का वह-कभी भी उल्लंघन  
  
के हि गुरु के थोड़े इशारे से ही वह एकदम उन्नति ह  
जाते हैं | साधारण अभ्यासियों ॥;  
करना होता है । 7 तरह उनको परिश्रम हु  
जिनमें सम्पूर्ण ईश्वरीय गुण आ जायें ँ  
  
में सत्यता और निष्कामता हो, जो तदाकार- सतत का  
जावें जिसमें सम्पूर्ण गुण समय-समय पर वर्तमान होते  
दिखाई दें जिसके लिये प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों समान ही  
  
व्यवहार 4

--- IMG\_7442.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ५७  
  
जो सब में मिला हुआ और सबसे अलग रहे, तात्पर्य यह है  
कि जो साम्यावस्था से तात्पर्य यह होता है कि पूरा व्यवहारी  
हो और पूरा परमार्थी व त्यागी हों, दोनों अवस्थाएँ समानता  
के साथ स्वाभाविक रीति से उसमें जायें इत्यादि | और ये ही  
अवस्था जब अधिक घनी और इतनी गहरी हो जायें कि कोई  
उसको पहचान न सके कि यह मनुष्य व्यवहारी है वा  
परमार्थी | व्यवहार और परमार्थ दोनों के लेबिल बराबर हो  
जायें ऐसा पूर्ण पुरुष 'परमसन्त' कहलाता है । इस दशा के  
प्राप्त हो जाने पर वह मनुष्यत्व श्रेणी में आता है इससे पूर्व  
वह वास्तव में मनुष्य नहीं था ।  
गुरु और परम-गुरु  
  
यह सन्त दो प्रकार के होते हैं | एक वह जो केवल  
उधर को ही हर समय खिंचे रहते हैं और प्रेमावेश में झूमते  
रहते हैं | ऐसों में आकर्षण अधिक होता है | जब कोई  
जिज्ञासु शिक्षा लेने की गरज से इनके समीप पहुँचता है तो  
| अपनी शक्ति से उसे भी नीचे स्थानों से खींच के ऊँचा ले  
जाते हैं | और उसे भी मस्त कर देते हैं | इनका मार्ग-प्रेम  
और ज्ञान है व्यवहार की इनको चिन्ता बिलकुल नहीं होती ।  
ऐसों से शिक्षा पाये हुए लोग एक ओर के ही रहते हैं यह सब  
“गुरु” कहलाते हैं | इनका दर्जा कुछ नीचे होता है ।  
  
और परम गुरु वह कहलाते हि कि जिनमे जाए परी  
  
बातों के साथ | यह कर्मकाण्ड व  
  
सब बातों के साथ- नल ावहार भी नहीं बिगड़ने  
भी ठीक रखते हैं | अपने रि होता  
की पूर्ण शक्तियों पर इनको अधिकार प्रा ता  
देते । प्रभु की पूर्ण को चाहें ऊँचा पहुँचा दें और  
है | जिस समय जिस अभ्यासी

--- IMG\_7443.txt ---

ता (स दूध पी लेता है  
उसके | जिस प्रकार हंस दूध पी उसी.  
और उसमें जो शक का होता है उसे त्याग देता है उसी.  
तरह यह सविकल्प-समाधि द्वारा विश्व भण्डाः में से हक  
पदार्थ जो चैतन्य है उसको ले लेते हैं और शेष सबको छ '  
देते हैं | ऐसे योगी-जन “हंस” कहलाते हैं। छा  
  
इसके ऊपर एक और स्टेज (अवस्था) आती हैं कि  
जिसमें विवेक शक्ति अथवा बुद्धि भी कोई कार्य नहीं करती.  
इसको शास्त्रों ने निर्विकल्प समाधि का नाम दिया है, इंस॑ ,  
अवस्था वाले को “परमहंस” कहा जाता है |  
  
साधु  
  
साधना करने वाला  
विरक्त हो और चाहे  
जब उसकी गुरुमत होकर श्रद्धा  
उसको प्राप्ति के उद्योग  
\_धु” हो जाती है हक लगता है तभी उसकी संज्ञा  
  
0-£]  
2  
8  
रे  
ठ|  
-3  
दर  
का ।  
-7]  
-2|  
-४  
5  
--|  
शथ  
|  
80 | हि

--- IMG\_7444.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] (६  
  
पड़ता है और दृढ़ता से अपना कार्य करता हुआ सफलता  
प्राप्त कर लेता है।  
  
सत्‌-संगी  
  
सत्‌-पुरुष के संग करने वालों को ”सत्‌-संगी” कहते  
  
हैं | जिन महापुरुषों ने तमोगुण और रजोगुण को हटा कर  
  
अपने अन्दर सत्‌ प्रधान बना लिया है उनका समीपत्व प्राप्त  
  
या हर समय उनकी सुधि रखना सत्संगी का कर्त्तव्य  
  
है | यहाँ वह श्रवण और मनन के सहारे अपने मन को ऊँचा  
  
उठाया करता है और साधना के योग्य उसको बनाता है |  
  
अधिकारी  
  
ईश्वर के लिये तड़प होना तथा आत्मिक उन्नति की  
पाहना रखना अधिकारी का लक्षण है । जिसने न तो अभी  
तक किसी को गुरु बनाया है और न कोई साधन किया है  
परन्तु चाहता है कि इस मार्ग में लगूँ उसका नामा 'अधिकारी'  
है | शिक्षक के मिल जाने पर ऐसा मनुष्य साधन में जुट  
पड़ता है और अपना काम बना लेता है ।  
यह सब बातें हमने इसलिये कहीं हैं कि आप लोग  
अपने लिये अन्दाजा लगा सकें कि अभी आप इनमें से किस  
दर्जे पर हैं | आप सब अपने को सत्संगी कहते हैं परन्तु मैं  
सत्संगी उसको समझता हूँ कि जो सन के ग्रहण और असत्‌  
के गुरुमत से काम करे ।  
के त्याग क लिये शिष्य को कहते हैं जो मन-वचन और  
गुरुमत उस ही में चले अपनी समझ से कोई काम  
कर्म से गुरु को आज्ञा मन का इतना जोर है कि प्रत्येक  
न करे | आजकल मनन्‍-मा

--- IMG\_7445.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उ  
  
हर  
  
रहता जो  
  
बात का इच्छुक रहता है कि हम पे हाँ  
ब तत गुरु बतलावें और हमारी हाँ में हाँ मिल  
ज़रा से भी उसके विरूद्ध न जायें । यदि कोई बात ऐसी ऋ  
दी जावे कि उनकी समझ से ठीक न हो ते हु  
करने को तैयार नहीं होते यह सं मन-मत कह मत लत होने  
मेरे प्यारा | यदि इस सत्सग में सम्मिलित होने.  
  
गरज तुम्हारी इतनी ही है कि आँख बन्द करके शिर 3  
  
नल  
  
लें तो मैं कहूँगा कि तुम अभी मन-मत ही हो जब तक  
  
यहाँ के बाहिरी नियमों को भी पालन न करो, यहीं  
  
सिद्धान्त यह हैं कि निष्कामता के साथ अभ्यास करो  
सबकी सेवा करने को हर समय उद्यत रहो । मनुष्य-माय  
की सेवा करना ही ईश्वर की पूजा है, इसका बड़ा अच्छु  
फल मिलता है। जो सच्चे हृदय से सेवा करता और रेंज  
लेने से बचता है वही परमात्मा का प्यारा बनता है । आ  
लिये कुछ न करो जो कुछ भी तुम्हारा हो दूसरों के लिये हो]:  
लगलिपट के आत्म उन्‍नति कर डालो फिर इस संसार \_में  
प्रचार करो | आजकल अन्धकार बहुत छाया हुआ है इसको...  
अपने ज्ञान के प्रकाश से छाँट डालो और भूले-भटके मन सी प  
को ईश्वर की ओर ले जाओ | इस कर्तव्य को ध्यान नम  
रक्‍्खो। परमात्मा ध्यान मेह  
  
परमात्मा तुम्हारी सहायता -करेगा | हर  
  
“ओ३म्‌ शम्‌,